

---

## .. Hymn to River Narmada ..

॥ नर्मदाष्टकं ॥

### Document Information

---

Text title : narmadaashhTakaM Hymn to River Narmada

File name : narmadaa8.itx

Category : aShTaka

Location : doc\_devii

Author : Popular stotra

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/hinduism

Transliterated by : Savithri D. savdev at hotmail.com

Proofread by : Savithri D. savdev at hotmail.com

Latest update : June 14, 2000

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

---

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

---

August 2, 2016

*sanskritdocuments.org*

---

## ॥ नर्मदाष्टकं ॥

सबिन्दुसिन्धुसुस्वलत्तरङ्गभङ्गरञ्जितं  
द्विषत्सु पापजातजातकादिवारिसंयुतम् ।  
कृतान्तदूतकालभूतभीतिहारिवर्मदे  
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥ १ ॥

त्वदम्बुलीनदीनमीनदिव्यसम्प्रदायकं  
कलौ मलौघभारहारिसर्वतीर्थनायकम् ।  
सुमच्छकच्छनकचक्रवाकचक्रशर्मदे  
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥ २ ॥

महागभीरनीरपूरपापधूतभूतलं  
ध्वनत्समस्तपातकारिदारितापदान्चलम् ।  
जगल्लये महाभये मृकण्डुसूनुहर्म्यदे  
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ३ ॥

गतं तदैव मे भयं त्वदम्बु वीक्षितं यदा  
मृकण्डुसूनुशौनकासुरारिसेवितं सदा ।  
पुनर्भवाब्धिजन्मजं भवाब्धिदुःखवर्मदे  
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ४ ॥

अलक्ष्यलक्षकिन्नरामरासुरादिपूजितं  
सुलक्षनीरतीरधीरपक्षिलक्षकूजितम् ।  
वसिष्ठशिष्टपिप्पलादिकर्दमादिशर्मदे  
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ५ ॥

सनत्कुमारनाचिकेतकश्यपात्रिषत्पदैः  
धृतं स्वकीयमानसेषु नारदादिषतपदैः ।  
रवीन्दुरन्तिदेवदेवराजकर्मशर्मदे  
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ६ ॥

अलक्षलक्षलक्षपापलक्षसारसायुधं  
ततस्तु जीवजन्तुतन्तुभुक्तिमुक्तिदायकम् ।  
विरिञ्चिविष्णुशंकरस्वकीयधामवर्मदे  
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ७ ॥

अहो धृतं स्वनं श्रुतं महेशिकेशजातटे  
किरातसूतबाडबेषु पण्डिते शठे नटे ।

दुरन्तपापतापहारि सर्वजन्तुशर्मदे  
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ८ ॥

इदं तु नर्मदाष्टकं त्रिकालमेव ये सदा  
पठन्ति ते निरन्तरं न यन्ति दुर्गतिं कदा ।  
सुलभ्यदेहदुर्लभं महेशधामगौरवं  
पुनर्भवा नरा न वै विलोकयन्ति रौरवम् ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ  
नर्मदाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

---

.. Hymn to River Narmada ..  
was typeset on August 2, 2016

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

